महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

आलोचना पर बाजारवाद का प्रभाव - प्रो. गिरीश्वर मिश्र

'भारतीय इतिहासबोध का संघर्ष' विषय पर व्याख्यान

वर्धा दि. 13 अप्रैल 2015: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि आज की हिंदी आलोचना पर बाजारवाद का गहरा प्रभाव है। आलोचना किसी भी दृष्टिकोण से की जा सकती है और यह स्थिति बौद्धिक विकास का पर्याय है, लेकिन बौद्धिकों को अपने विचारों के स्रोत के बारे में या अपनी दार्शनिक प्रेरणाओं के बारे में स्थिति अवश्य स्पष्ट करनी चाहिए।

श्री मिश्र ने यह बात वर्धा संस्कार एवं बहूवचन के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हबीब तनबीर सभागार में आयोजित

`हिंदी आलोचना का इतिहास` संगोष्ठी में कही। उन्होंने ब्रितानी साम्राज्यवादी इतिहासकारों और बौद्धिकों द्वारा भारतीयों के बारे में फैलाए गए दुष्प्रचार के बारे में भी बताया। उनका कहना था कि मनोविज्ञान जैसे अकादमिक अनुशासन तक में इस तरह की तर्कहीन और गर्हित बातें भारतीयों के बारे में दर्ज हैं।

इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा अनुसंधान अधिकारी जीतेन्द्र गुप्ता को शाल देकर सम्मानित किया गया। युवा आलोचक जीतेन्द्र गुप्ता को पिछले दिनों दिल्ली में 19 वें देवीशंकर अवस्थी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें यह पुरस्कार उनकी आलोचनात्मक पुस्तक 'भारतीय इतिहासबोध का संघर्ष और हिंदी प्रदेश' के लिए प्रदान किया गया। जीतेन्द्र गुप्ता ने 'इतिहास बोध का संघर्ष- संघर्ष का इतिहास बोध' विषय पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने 20वीं शताब्दी के आरंभिक दौर में भारतीय जनता के बारे में ब्रितानी साम्राज्यवादी इतिहासकारों की गलत व्याख्याओं के इतिहास को बताया और विस्तारपूर्वक जानकारी दी कि किस प्रकार हिंदी के प्रारंभिक बौद्धिकों ने भारतीय इतिहासबोध को एक शक्ल प्रदान की।

व्याख्यान के पश्चात 'हिंदी आलोचना का इतिहास' विषय पर एक संगोष्ठी हुई जिसमें गोरखपुर विश्वविद्यालय से आए मुख्य अतिथि प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने जीतेन्द्र गुप्ता की उनके आलोचकीय साहस के लिए प्रशंसा की और हिंदी आलोचना की आरंभिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी प्रदेश में बौद्धिक स्तर पर उपजे साम्राज्यवाद विरोधी माहौल के बारे में बताया। उन्होंने इस बौद्धिक उपलब्धि का श्रेय हिंदी के आरंभिक आलोचकों को दिया। संगोष्ठी में साहित्य विद्यापीठ के प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने हिंदी आलोचना पर दो टूक बातें कहीं। उन्होंने इस बात की ओर भी इशारा किया कि बहुत से आलोचक विदेशी रचनाकारों और आलोचकों को बिल्कुल नहीं पढ़ते जिससे बहुत खराब स्थिति उत्पन्न हो रही है। इसके पश्चात प्रो. सूरज पालीवाल, डा. रामानुज अस्थाना, युवा कहानीकार मनोज कुमार पांडेय व शोध छात्र संजीव कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि भाषा और विचार का विकास असहमति से होता है। असहमति से ही वातावरण निर्मित होता है। आज की आलोचना तुरंत संस्कृति की

आलोचना है। उन्होंने संगोष्ठी में हुए विचार- विमर्श की प्रशंसा की और कहा कि विश्वविद्यालय 'हिंदी आलोचना के इतिहास' पर गोष्ठियों के माध्यम से आगे भी कार्य करेगा। संगोष्ठी का सफल संचालन बहुवचन संपादक अशोक मिश्र ने किया। कार्यक्रम के अंत में कथाकार राकेश मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। विवि के प्रकोष्ठ वर्धा संस्कार के संयोजक राकेश श्रीमाल एवं बहुवचन संपादक ने संगोष्ठी को क्रियान्वित किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, छात्र और शोधार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।